अध्याय 13

अय्यूब का उत्तर
(भाग 2)

अय्यूब का ज्ञान कुछ कम नहीं (13:1, 2)

[1]"सुनो, मैं यह सब कुछ अपनी आँख से देख चुका, और अपने कान से सुन चुका और समझ भी चुका हूँ।

आयतें 1, 2. अध्याय 11 में सोपर ने परमेश्वर के मार्गों के रहस्यपूर्ण होने पर ध्यान दिलाया था। अय्यूब जानता था कि यह सही है। वह अन्य कहावतों को भी जानता था जिन्हें उसके मित्र नीरसता से दोहरा रहे थे। परन्तु वह इस बात पर दृढ़ रहा कि वे कहावतें उस पर लागू नहीं होती। 12:3 में अय्यूब ने पहले किए गए अपने दावे को दोहराया: "**मैं तुम लोगों से कुछ कम नहीं।**"

"तुम लोग निकम्मे वैद्य हो" (13:3–12)

[3]"मैं तो सर्वशक्तिमान से बातें करूँगा, और मेरी अभिलाषा परमेश्वर से वाद-विवाद करने की है। [4]परन्तु तुम लोग झूठी बात के गढ़नेवाले हो; तुम सबके सब निकम्मे वैद्य हो। [5]भला होता कि तुम बिलकुल चुप रहते, और इससे तुम बुद्धिमान ठहरते। [6]मेरा विवाद सुनो, और मेरी बहस की बातों पर कान लगाओ। [7]क्या तुम परमेश्वर के निमित्त टेढ़ी बातें कहोगे, और उसके पक्ष में कपट से बोलोगे? [8]क्या तुम उसका पक्षपात करोगे, और परमेश्वर के लिये मुक़द्दमा लड़ोगे? [9]क्या यह भला होगा कि वह तुम को जाँचे? क्या जैसा कोई मनुष्य को धोखा दे, वैसा ही तुम क्या उसको भी धोखा दे सकते हो? [10]यदि तुम छिपकर पक्षपात करो, तो वह निश्चय तुम को डाँटेगा। [11]क्या तुम उसके माहात्म्य से भय न खाओगे? क्या उसका डर तुम्हारे मन में न समाएगा। [12]तुम्हारे स्मरणयोग्य नीतिवचन राख के समान हैं; तुम्हारे गढ़ मिट्टी ही के ठहरे हैं।"

आयत 3. अय्यूब ने मित्रों द्वारा सुझाए गए मार्ग से बिल्कुल अलग रास्ता पकड़ने के अपने इरादे को बताया। उसने अपना केस इस प्रकार से पेश करना था जैसे अदालत में हो। **वाद विवाद** (*yakach, याकाच*) शब्द का अनुवाद "निर्णय देना," "डांटना," या "दण्ड देना" भी हो सकता है।[1] अय्यूब ने यह मान लिया कि उसकी विपत्तियों का कारण **परमेश्वर** के साथ उसके सम्बन्ध में छिपा है। इसलिए उसने उम्मीद की कि परमेश्वर से सीधे आमने सामने बातचीत करने से मामला सुलझ जाएगा।[2]

आयत 4. अय्यूब ने मित्रों पर उस पर **झूठी बात के गढ़नेवाले** या उस पर "लेप लगाने वाले" होने का आरोप लगाया (देखें भजन संहिता 119:69); उनके दोष लगाने से उसके

वास्तविक चरित्र को समझ पाना असम्भव हो गया।[3] अय्यूब ने भी अपने मित्रों पर **निकम्मे वैद्य** होने का इल्ज़ाम लगाया। वे ऐसी बीमारी का इलाज बता रहे थे जो थी ही नहीं। अय्यूब को बड़ा पापी कहना गलत था, इसलिए उसकी चंगाई के लिए उनका नुकसान बिना आधार के था।

आयत 5. अय्यूब के मित्रों ने जब उसे पहली बार देखा तो वे सात दिन तक **चुप** बैठे थे (2:13)। उन्होंने उस दौरान अपने आपको बड़ा **बुद्धिमान** दिखाया। आम तौर पर लोग मित्रों के पास उनके बड़े शोक के समय नहीं जाते, क्योंकि उन्हें समझ में नहीं आता कि वे क्या कहें। हमें इस बात का पता होना चाहिए कि हमें कुछ कहने की आवश्यकता नहीं होती सिवाय इसके कि "मुझे अफसोस है" और "मैं आपको बताना चाहता हूं कि मैं आपसे प्यार करता हूं।" जो बातें हमारी समझ में न आएं उन्हें समझाने का काम हमारा नहीं है।

आयत 6. यदि मित्र चुप रहते तो उन्होंने उससे सीख लेना था। अय्यूब ने उनसे कहा[4] कि उसकी बातें **सुनो** यानी उसकी **बहस की बातों पर कान लगाओ**।

आयतें 7-9. इन आयतों में छह अलंकारिक प्रश्न हैं जो अय्यूब ने मित्रों के सामने रखे।

1. "**क्या तुम परमेश्वर के निमित्त टेढ़ी बातें कहोगे,**"
2. "[क्या तुम] **उसके पक्ष में कपट से बोलोगे?**"
3. "**क्या तुम उसका पक्षपात करोगे,**"
4. "[क्या] **परमेश्वर के लिये मुक़द्दमा लड़ोगे?**"
5. "**क्या यह भला होगा कि वह तुम को जाँचे?**"
6. "**क्या जैसा कोई मनुष्य को धोखा दे, वैसा ही तुम क्या उसको भी धोखा दे सकते हो?**"

ज़ोर देने के लिए मूल भाषा में "परमेश्वर के निमित्त" (*hal'el, हालेल*) को आयत 7 के आरम्भ में रखा गया है। वास्तव में ये मित्र "परमेश्वर के निमित्त" तो बात कर रहे थे परन्तु वे *परमेश्वर की प्रकट इच्छा* की बात नही कर रहे थे। अय्यूब ने मित्रों पर परमेश्वर के प्रति "पक्षपात" दिखाने का आरोप लगाया।

इब्रानी भाषा में प्रश्न (*h^{a}panayw thiśśa'un, हेपानेयब थिस्साउन*) का अक्षरशः अनुवाद "क्या तुम उसका चेहरा उठाओगे?" हो सकता है। परमेश्वर के प्रति पक्षपात दिखाते हुए मित्रों ने अय्यूब के साथ उचित रूप से व्यवहार नहीं किया और प्रमाण का मूल्यांकन ठीक ने नहीं किया।

उल्टा मित्रों से सवाल करके कि "क्या यह भला होगा कि वह तुम जांचे?" अय्यूब ने पासा पलट दिया। "जांचे" (*chaqar, चक़र*) शब्द "सावधान, कठिन जांच, पूछताछ या छानबीन का संकेत है।"[5] दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को चेतावनी दी:

> तू अपने पिता के परमेश्वर का ज्ञान रख, और खरे मन और प्रसन्न जीव से उसकी सेवा करता रह; क्योंकि यहोवा मन को जांचता और विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है उसे समझता है। यदि तू उसकी खोज में रहे, तो वह तुझ को मिलेगा; परन्तु यदि तू उसको त्याग दे तो वह सदा के लिये तुझ को छोड़ देगा (1 इतिहास 28:9)।

आयतें 10, 11. ''यदि तुम छिपकर पक्षपात करो, तो वह निश्चय तुम को डाँटेगा।'' यदि मित्र अय्यूब के साथ अन्यायपूर्ण ढंग से व्यवहार कर रहे थे तो उन्होंने परमेश्वर के दण्ड को काटना था। वह निष्पक्ष न्यायी है (व्यवस्थाविवरण 10:17; 2 इतिहास 19:7; अय्यूब 34:19) जो पक्षपात दिखाने वालों और न्याय को बिगाड़ने वालों का विरोधी है (लैव्यव्यवस्था 19:15; व्यवस्थाविवरण 1:17; 16:19; भजन संहिता 82:2; मलाकी 2:9)। परमेश्वर के **माहात्म्य** ने मित्रों के मनों में भय डालना था।

आयत 12. स्मरणयोग्य नीतिवचन या ''कहावतें'' जो मित्रों ने सुनाई थीं, **राख के समान** थीं। उनके **गढ़** या ''बचाव'' **मिट्टी** की तरह कमज़ोर थे। अन्य शब्दों में उनके द्वारा दोहराई गई लोकोक्तियां व्यर्थ और उनके तर्क अय्यूब की स्थिति की सच्चाई के सामने कमज़ोर थे। जॉन ई. हार्टले ने टिप्पणी की है:

> ज्ञान की बातें सिखाने वाले अपनी शिक्षाओं के समर्थन के लिए खुलकर लोकोक्तियों, कहावतों और सूक्तियों का इस्तेमाल किया करते थे।... सूक्तियों में चाहे जीवन की गहरी समझ की पेशकश होती है पर उनकी संक्षिप्ता और स्थिर रूप विलक्षण परिस्थितियों को सम्बोधन करने के लिए उन्हें सृजात्मक से सृजनात्मकता से रोकते हैं। हर परिस्थिति में उन्हें केवल दोहरा देना व्यर्थता ही है।[6]

सफाई में अय्यूब का भरोसा (13:13-19)

[13]''मुझ से बात करना छोड़ो कि मैं भी कुछ कहने पाऊँ; फिर मुझ पर जो चाहे वह आ पड़े। [14]मैं क्यों अपना मांस अपने दाँतों से चबाऊँ? और क्यों अपना प्राण हथेली पर रखूँ? [15]वह मुझे घात करेगा, मुझे कुछ आशा नहीं; तौभी मैं अपनी चाल चलन का पक्ष लूँगा। [16]यह भी मेरे बचाव का कारण होगा, कि भक्तिहीन जन उसके सामने नहीं जा सकता। [17]चित्त लगाकर मेरी बात सुनो, और मेरी विनती तुम्हारे कान में पड़े। [18]देखो, मैं ने अपने मुक़द्दमे की पूरी तैयारी की है; मुझे निश्चय है कि मैं निर्दोष ठहरूँगा। [19]कौन है जो मुझ से बहस कर सकेगा? ऐसा कोई पाया जाए, तो मैं चुप होकर प्राण छोड़ूँगा।''

आयतें 13, 14. अय्यूब ने **बात** करने की ठान ली थी ताकि वह दोषमुक्त ठहर सके। उसने यह समझ लिया था कि यह खतरनाक है और इससे उसका **प्राण** जा सकता है। फिर भी उसने स्वर्ग के दरबार में अपना दिन होना तय कर लिया था।

आयत 15. ''वह मुझे घात करेगा, मुझे कुछ आशा नहीं; तौभी मैं अपनी चाल चलन का पक्ष लूँगा।'' अय्यूब यह कह रहा था कि परमेश्वर चाहे उसे ''मार डाले'' और उसे जीने की कोई ''आशा'' नहीं थी, फिर भी उसने परमेश्वर के सामने अपना ''पक्ष'' रखना ही था। इस मूल पठन को मानने के सम्बन्ध में सेमुएल कॉक्स ने कहा है, ''यदि हम परमेश्वर में अजेय विश्वास अर्थात उस मृत्यु से भी बलवान विश्वास की उत्तम अभिव्यक्ति को खो देते हैं, तो हमें उस शानदार और निडर खराई की सच्चाई के प्रति वफादारी की शानदार अभिव्यक्ति मिलती है, जो हर हाल में अपने आप में कायम रहती है।''[7] NASB का अनुवाद इस प्रकार से है, ''चाहे वह मुझे घात करे, मेरी आशा उसी में रहेगी। मैं उसके सामने अपने चाल-चलन का तर्क दूंगाा।''

आयत 16. अपने निर्दोष होने में अय्यूब का यकीन इस आयत में दिखाई देता है। क्योंकि वह आश्वास्त था कि परमेश्वर की ओर से सुनवाई होने पर, वह दोषमुक्त होगा और उसकी निर्दोषता साबित हो जाएगी। अय्यूब का विश्वास था कि परमेश्वर द्वारा उसकी बात सुने जाने पर अपने आप ही उसका निर्दोष होना साबित हो जाएगा क्योंकि **भक्तिहीन जन** परमेश्वर के **सामने** नहीं जा सकते।

आयतें 17-19. एक बार फिर से अय्यूब ने अपने मित्रों को चुनौती दी कि उसकी बातें **सुनो** (देखें 13:6)। इन आयतों में कानूनी भाषा स्पष्ट मिलती है: **अपने मुकद्दमे**, **निर्दोष** और **बहस** सब अदालती भाषा के शब्द हैं। ''निर्दोष'' का अनुवाद ''धर्मी घोषित हुआ'' भी हो सकता है। इब्रानी शब्द *tsadeq* (*त्साडेक़*) का अर्थ ''ईमानदार होना'' या ''सही होना'' है।[8] अय्यूब यह कह रहा था, ''पता चल जाएगा कि मैं उन मित्रों द्वारा लगाए गए आरोपों का दोषी नहीं हूं। मैं बरी हो जाऊंगा।'' अय्यूब को नहीं लगता था कि कोई, यहां तक कि परमेश्वर भी उस पर इल्ज़ाम लगा सकता है। परन्तु यदि परमेश्वर उस पर इल्ज़ाम लगाता तो अय्यूब **चुप होकर प्राण छोड़** देने को तैयार था।

अपने पापों को जानने की अय्यूब की मांग (13:20-28)

[20]''दो ही काम मुझ से न कर, तब मैं तुझ से नहीं छिपूँगा: [21]अपनी ताड़ना मुझ से दूर कर ले, और अपने भय से मुझे भयभीत न कर। [22]तब तेरे बुलाने पर मैं बोलूँगा; नहीं तो मैं प्रश्न करूँगा, और तू मुझे उत्तर दे। [23]मुझ से कितने अधर्म के काम और पाप हुए हैं? मेरे अपराध और पाप मुझे बता दे। [24]तू किस कारण अपना मुँह फेर लेता है, और मुझे अपना शत्रु गिनता है? [25]क्या तू उड़ते हुए पत्ते को भी कँपाएगा और सूखे डंठल के पीछे पड़ेगा? [26]तू मेरे लिये कठिन दु:खों की आज्ञा देता है, और मेरी जवानी के अधर्म का फल मुझे भुगताता है। [27]तू मेरे पाँवों को काठ में ठोंकता, और मेरी सारी चाल चलन देखता रहता है; तू मेरे पाँवों के चारों ओर सीमा बाँधता है। [28]मैं सड़ी-गली वस्तु के तुल्य हूँ, जो नष्ट हो जाती है, और कीड़ा खाए कपड़े के तुल्य हूँ।''

आयतें 20-22. अय्यूब ने विनती की कि परमेश्वर उससे **अपनी ताड़ना** दूर कर ले। परमेश्वर की ''ताड़ना'' उसकी शक्ति का सूचक है; अय्यूब का मानना था कि उसका दु:ख और क्लेश सीधे परमेश्वर की ओर से थे। यदि परमेश्वर अय्यूब की विनती को मान लेता तो अय्यूब ने परमेश्वर के साथ उसी सहभागिता में फिर से लौट पाना था जो पहले उसकी उसके साथ थी।

आयत 23. पहले अय्यूब ने अपने पापों की गिनती और फिर उनके प्रकार के बारे में पूछा। यह सम्भव है कि तीन शब्दों **अधर्म**, **पाप** और **अपराध** का इस्तेमाल जानबूझकर उन विभिन्न कारणों का संकेत देने के लिए किया गया जिनके कारण पाप हो सकता है।[9] यही शब्द प्रायश्चित के दिन महायाजक द्वारा इस्राएल के पापों के अंगीकार में इस्तेमाल होते थे (लैव्यव्यवस्था 16:21)।

आयत 24. **''तू किस कारण अपना मुँह फेर लेता है, और मुझे अपना शत्रु गिनता है?''** ''किसी दूसरे को देखने से इनकार करना अपमान का संकेत है।''[10] अय्यूब की बड़ी पीड़ा

परमेश्वर से अलगाव का उसका बोध था। यह पुस्तक के मुख्य विषय की ओर ध्यान दिलाता है जो मनुष्य के अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ सम्बन्ध से सम्बन्धित है।

आयतें 25-28. अय्यूब ने अपनी भावनाओं को बताने के लिए सजीव रूपक का इस्तेमाल किया। उसने अपने आपको बेकार चीज़ों से जो हवा के झोंके से उड़ जाती हैं यानी **उड़ते हुए पत्ते** और **सूखे डंठल** से मिलाया। रॉबर्ट एल. आल्डन ने लिखा है, ''उसके कहने का तात्पर्य था कि जीवन के इन प्रतीकों का जो कभी था, सताना और इच्छा करने का प्रयास परमेश्वर की शान के अनुरूप नहीं था।''[11] अय्यूब ने हाल के दिनों में कुछ ऐसा नहीं किया था कि उसे इतना बड़ा कष्ट उठाना पड़े, इसलिए उसने परमेश्वर पर उसकी **जवानी के अधर्म** के लिए उसे दण्ड देने का आरोप लगाया (देखें भजन संहिता 25:7)। उसने अपने आपको एक कैदी की तरह भी माना जिसके **पावों** को **लकड़ी** से बांधा गया हो। अपने शरीर के **सड़ी गली वस्तु के तुल्य** होने के कारण उसने अपने आपको **कीड़ा खाए कपड़े** के साथ मिलाया।

अय्यूब ने अपनी समस्याओं को परमेश्वर की ओर से होने के रूप में देखा। उसे यह समझ नहीं थी कि उस पर ये सब विपत्तियां क्यों पड़ी थीं। इससे उसकी पीड़ा और दु:ख और तेजी से बढ़ गया। हमारे ऊपर विपत्तियां आने पर हमारा यही सवाल होता है कि ''क्यों?'' कई बार उत्तर इतनी जल्दी नहीं मिलते या वैसे नहीं मिलते जैसी हमें उम्मीद होती है।

प्रासंगिकता

जब तूफ़ान आता है (13:15)

तूफ़ान के आने से पहले धूप के लिए परमेश्वर को महिमा दें। आयरलैंड की एक पुरानी आशीष इस प्रकार से है:

> काश कि तुम से मिलने के लिए सड़क उठ खड़ी हो।
> काश कि हवा तुम्हारे पीछे से चले।
> काश कि सूर्य की चमक तुम्हारे चेहरे पर पड़े
> और बारिश तम्हारे खेतों के ऊपर हलके से पड़े।
> और, हमारे दोबारा मिलने तक,
> परमेश्वर तुझे अपने हाथ की हथेली में थामे रखे।

यह एक शानदार विचार और शानदार आशीष है!

जीवन बड़ा सुखद होता है जब धूप चमक रही हो, ठण्डी हवा चल रही हो और सब कुछ ठीक ठाक हो। उस समय में हर दिन का आनन्द लेना बड़ा महत्वपूर्ण होता है (यूहन्ना 15:11), ''अवसर को बहुमूल्य समझो'' (इफिसियों 5:16), और तुम्हें उन अच्छे समयों की आशीष देने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देना याद रखो। याकूब 1:17 कहता है, ''क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है।''

तूफ़ान आने पर हैरान न हों। परन्तु हम सब जानते हैं कि सूरज की धूप हर रोज़ नहीं रहती। संसार को पृथ्वी को फिर से भर देने के लिए वर्षा की आवश्यकता होती है, इसके बावजूद हम

जानते हैं कि ऐसे समय आते हैं जब वर्षा खेतों पर हल्के से नहीं गिरती। असल में हम सब ने मूसलाधार बारिश और तूफ़ान देखे हैं। जीवन बिल्कुल ऐसा ही है; यह पहाड़ों की चोटियों और वादियों, ऊंचाइयों और उतारों और चढ़ावों से भरा है। हम सब ने ''विजय का रोमांच'' देखा है पर हमें ''पराजय की पीड़ा'' भी पता है।

एवन मिलोन हार्डिंग यूनिवर्सिटी में मेरे एक सलाहकार और प्रोफेसर थे। वह आम तौर पर कहते, ''जीवन परीक्षाओं और क्लेशों और कठिनाइयों और व्यथाओं, दबावों, खतरों और परेशानियों से भरा है।'' मिलोन केवल इसी बात को दोहरा रहे होते थे जो यूहन्ना 16:33 में यीशु ने कही: ''संसार में तुम्हें क्लेश होता है।'' जब तक हम इस पतित संसार में रहते हैं तब तक हमें परेशानी और तूफानों को झेलना पड़ेगा। पतरस ने ''दु:ख रूपी अग्नि'' उनके ऊपर आने पर अपने पाठकों को हैरान होने को न कहा (1 पतरस 4:12)। बात यह नहीं हैं कि ''यदि'' तूफान आते हैं, बल्कि यह है कि ''जब'' तूफान आते हैं। पहाड़ी उपदेश के अंत में यीशु ने कहा, ''मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर से टकराईं'' (मत्ती 7:25)। हम पतित संसार में रहते हैं इसलिए हमें हमारे तूफानों के आने पर हैरान नहीं होना चाहिए।

जब तूफ़ान आते है, तो उम्मीद मत छोड़ें। प्रेरितों 27 में पौलुस उन 276 लोगों में से एक था जो लकड़ी के जहाज़ पर, उफनते समुद्र में, इटली की ओर जा रहा था। लूका ने लिखा है,

> थोड़ी देर में जमीन की ओर से एक बड़ी आंधी उठी, ... आंधी जहाज पर लगी ... अत: हम ने उसे बहने दिया और इसी तरह बहते हुए चले गए। जब बहुत दिनों तक न सूर्य, न तारे दिखाई दिए और बड़ी आंधी चलती रही, तो अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही (प्रेरितों 27:14-20)।

बहुमूल्य लोगों को धीरे-धीरे आशा छोड़ते हुए देखने से मेरा मन बड़ा दु:खी होता है।

यीशु मसीह के सुसमाचार के प्रचारक के रूप में मैं इस तथ्य से परिचित हूं कि किसी रविवार बहुत से भाई जो भयंकर तूफ़ान के बीच में फंस गए हैं या उसमें से अभी-अभी निकले हैं। मेरा मानना यह है कि हम उन लोगों के बारे में जानकर जो जीवन के तूफ़ानों के ''बड़े D'' के साथ निपट रहे होते हैं। किसी रविवार, हमारे बहुत से मैंबर उसमें से गुज़र रहे होते हैं या उनके प्रियजन उसमें से गुज़र रहे होते हैं। *Divorce* (तलाक) के तूफ़ान से गुजर रहे होते हैं। अय्यूब की तरह कुछ लोग *Disease* (या बीमारी) से निपट रहे होते हैं। ऐसे भी हैं जो *Discouragement* (निराशा) का सामना कर रहे होते हैं। ऐसे भी हैं जो 1 राजाओं 19 की तरह *Depression* (अवसाद) के तूफ़ान से जूझ रहे होते हैं। बहुत से लोग आर्थिक मामलों *Debt* (कर्ज) के तूफान से जूझ रहे होते हैं। यूहन्ना 11 वाली मरियम और मारथा की तरह कई लोग *Death* (मृत्यु) के तूफान से जूझ रहे होते हैं।

इन तूफ़ानों में से गुजरने वाले लोग हार जाते हैं और उम्मीद छोड़ने ही वाले होते हैं। *द पॉवर टू सी इट थ्रू* नामक पुस्तक में जिम मैगिन ने यह कहानी बताई है:

> ब्रूस लारसन का कहना है कि वह मैनिंगर के प्रसिद्ध मनोचिकित्सक क्लीनिक में गया। उसने स्टाफ के किसी जन से पूछा कि कौन सी बात है जिससे गम्भीर भावनात्मक

परेशानियों से लोगों के दु:ख के इलाज और चंगाई में फर्क पड़ता है। वहां के समूह ने उसे बताया कि पूरा स्टाफ जिस बात से सहमत था कि वह *आशा* थी! उन्होंने माना कि उन्हें नहीं मालूम कि लोगों को उम्मीद कैसे देनी है पर उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि वे असल में व्यक्ति में बदलाव को देख सकते थे जब *आशा* मिलती थी।[12]

तूफ़ान आने से पहले अपना घर चट्टान पर बनाएं ताकि जब तूफ़ान आए तो आप अपनी आशा परमेश्वर में रख सकें। मैं परमेश्वर के वचन और यीशु मसीह के शुभ-समाचार से लैस आशा का प्रचारक बनना चाहता हूं। मैं ऐसा लोगों को ''आशा के परमेश्वर'' और ''महिमा की आशा'' की ओर ध्यान दिला सकता हूं ताकि उनकी ''आशा बढ़ती'' जा सके (रोमियों 15:13; कुलुस्सियों 1:27)। मैं लोगों को अपनी आशा परमेश्वर में रखने की सहायता के लिए आशा का संकेत सुनाना चाहता हूं (अय्यूब 13:15)। मैं लोगों को ठोस आशा देना चाहता हूं ताकि उनका लंगर जीवन के तूफानों में उन्हें सम्भाले रखे। मैं लोगों को ''चट्टान के ऊपर अपना घर बनाने वाले बुद्धिमान'' जैसा बनने में सहायता करना चाहता हूं ताकि जब तूफान उनके घर से टकराए तो ''वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई'' (मत्ती 7:24, 25)।

अय्यूब के जीवन में भयंकर तूफान आया था; उसका संसार एकाएक उलटा पुलटा हो गया था। ताने, बेकार सलाह और अपने मित्रों के आरोपों के साथ साथ मृत्यु, बीमारी, निराशा, उदासी और निराशा से निकलने का प्रयास कर रहा था। उसके तीनों मित्र उसे झूठ के मरहम लगा रहे थे और उनकी सलाह बेकार थी (अय्यूब 13:4)। अय्यूब ने धीर-धीरे उम्मीद छोड़ दी। अध्याय 7 में ऐसा लगता है कि अय्यूब ने असल में उम्मीद छोड़ दी थी जब उसने कहा, ''मैं अपनी आंखों से कल्याण को न देखूंगा'' (7:7)। परन्तु कहानी में यहां पर अय्यूब ने दिलेरी से एक हिम्मत भरा फैसला लिया कि चाहे जो भी जाए वह परमेश्वर में अपनी आशा को बनाए रखेगा। अय्यूब ने कहा, ''वह मुझे घात करेगा, मुझे कुछ आशा नहीं; तौभी मैं अपने चाल-चलन का पक्ष लूँगा'' (13:15)। अय्यूब के निराशा भरे तूफ़ान के बीच में आशा की यह विश्वास भरी बात मुझे ''रोने वाले नबी'' के जीवन का ध्यान दिलाती है। अपने एक तूफ़ान के दौरान यिर्मयाह पुकार उठा था, ''और मुझ को मन से उतारकर कुशल से रहित किया है; मैं कल्याण भूल गया हूं; इसलिये मैं ने कहा, 'मेरा बल नष्ट हुआ, और मेरी आशा जो यहोवा पर थी, वह टूट गई है''' (विलापगीत 3:17, 18)। अध्याय 7 में अय्यूब के साथ बिल्कुल ऐसा ही हुआ; परन्तु अय्यूब की तरह यिर्मयाह ने दिलेरी करके परमेश्वर में अपनी आशा को देखने और रखने का निर्णय लिया। इसके बाद यिर्मयाह ने कहा,

> मैं यह स्मरण करता हूँ, इसीलिये मुझे आाशा हैं हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महाकरुणा का फल है, क्योंकि उसकी दया अमर है। प्रति भोर वह नई होती रहती है; तेरी सच्चाई महान है। मेरे मन ने कहा, ''यहोवा मेरा भाग है, इस कारण मैं उस में आशा रखूंगा'' (विपलापगीत 3:21-24)।

आशा कोई चाही जाने वाली सोच नहीं है। आशा परमेश्वर के अपनी प्रतिज्ञाओं के पूरा करने पर भरोसे के आधार पर रखी गई उम्मीद है।

सारांश। हमें हमेशा इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि अन्य मसीही लोग अपने जीवनों के तूफानों का सामना कर रहे हैं और उन पर धीरे-धीरे आशा को छोड़ने की परीक्षा है। इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को चिताया, ''आओ, हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ, ... परमेश्वर के समीप जाएं। आओ हम अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें; क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है'' (इब्रानियों 10:22, 23)। आइए हम आशा के संदेश को सुनाएं और लोगों से अय्यूब के जैसे बनने की दिलेरी रखने और अपनी ''आशा उस में'' रखने को कहें।

एफ. मिलस

टिप्पणियां

[1]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:410. [2]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 219. [3]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर ऐंड चार्ल्स ए. ब्रिगस, *ए हिब्रू ऐंड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रैस, 1968), 381 में देखें *tapal* (*टापाल*)। [4]इस भाग में कई इब्रानी शब्दों के सर्वनामों के अंत बहुवचन (''तुम'') हैं, जो यह संकेत देते हैं कि अय्यूब सभी मित्रों से कह रहा था। [5]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 125. [6]हार्टले, 221. [7]सेमुएल कॉक्स, *ए कॉमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब,* 2रा संस्क. (लंदन: केगन पॉल, ट्रेंच ऐंड कंपनी, 1885), 167. [8]कोहेलर ऐंड बामगार्टनर, 2:1003. [9]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 125. [10]हार्टले, 227.

[11]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 164. [12]जिम मैक्गुइगन, *द पावर टू सी इट थ्रू* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनेशनल बाइबल रिसोर्सस, 1989), 31.